पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

त्रिपुरा की जनजातीय लोककथाएँ

संग्रह एवं अनुवाद: डॉ. मिलन रानी जमातिया

1

खोतिर और राङचाल[1]

बहुत पहले की बात है। एक बुद्धिमान व्यक्ति था। उसे जादुई शक्तियों की जानकारी थी। एक दिन, उसका दामाद इस बात से परेशान था कि आज अपने साथी मजदूरों (रोवाल्म यानी बारी-बारी से काम करने वाले श्रमिक या मजदूर) के साथ दोपहर में क्या खाएगा! इस पर उसके ससुर ने कहा, "चिंता मत करो, भंडार[2] के भीतर जाओ और वह हिरन उठा लाओ, जिसे मैं कल शाम को लाया था।" दामाद भंडार में गया, लेकिन उसे हिरन के बजाय एक सुंदर युवती बंधी हुई दिखाई दी। दामाद वापस आया, ससुर ने कई बार पूछा-हिरन मिला? दामाद हर बार एक ही उत्तर देता- वहाँ हिरन है ही नहीं। ससुर समझ गए और बोले- ठीक है, आप पहले अपना चेहरा मेरे कपड़े के टुकड़ा से पोंछ लें, फ़िर अंदर जाएँ। उसने वैसा ही लिया और भीतर जाकर हिरन ले आया, फ़िर उसे दिन के भोजन हेतु पका लिया।

सबको दोपहर का भोजन बहुत पसंद आया। भोजन के बाद, जब ससुर काइरिंग[3] के नीचे झाड़ू लगाने लगे तो उन्होंने दामाद द्वारा चबायी गयी हड्डियों के ऐसे टुकड़े देखे, मानो वे हड्डियाँ नहीं बल्कि नदी में स्नान करने के दौरान इकट्ठे किये गये कंकड़ और पत्थरों के टुकड़े थे। ससुर समझ गए कि वही एकमात्र भरोसेमंद आदमी है, यह सोचकर उन्होंने दामाद के माथे पर एक छोटा-सा पत्थर गाड़ दिया और बोले- "आप समुदाय के मुखिया बनिए और जब तक आपके उखड़े हुए दाँत में तोंग-बर्र भरा रहे तब तक बने रहिए। यहाँ के लोगों को मौत तभी आएगी, जब आप चाहेंगे।" इसके बाद सभी गांव वाले बूढ़े हो गए, वे जीवित रहकर थक गए और बार-बार मरने की कामना करने लगे पर

उस वरदान और माथे के पत्थर के कारण उन्हें मृत्यु नहीं आती थी। यहाँ तक कि उन्होंने कई बार मरने की पूरी तैयारियाँ कीं, अपने सारे पशु, पक्षी आदि मार डाले, परन्तु फ़िर भी मौत नहीं आई।

आखिर एक दिन दामाद ने सभी को बुलाया और कहा, "बहुत समय पहले" टीएन-लाई गांव के एक चौथाई लोग मरे तो उसके माथे से यह पत्थर भी एक चौथाई बाहर था। उनके मरने की प्रक्रिया चलती रही, एक दिन पूरा गाँव मर गया, और उसके माथे से पत्थर भी बाहर आ गया, लेकिन एक गर्भवती गाय और एक गर्भवती महिला बच गयीं, क्योंकि वे गाँव से दूर झूम खेत में गयी हुई थीं। जब वे दोनों वापस आयीं तो उन्हें गांव में कोई नहीं मिला, सब जगह लोग मरे पड़े थे। यह देखकर वह गर्भवती महिला और गर्भवती गाय वापस झूम कायरंग में जाकर रहने लगीं। महिला अक्सर बुनाई किया करती, लेकिन प्राय: उसकी शटल गिर जाया करती। गाय महिला को शटल उठाकर दिया करती। इस क्रम में उन्होंने एक सौदा या समझौता किया कि वे दोनों अपने पैदा होने वाले बच्चों की एक-दूसरे से शादी कराएँगी। कुछ समय बाद उस महिला ने एक सुंदर लड़की और गाय ने एक सुंदर बछड़े को जन्म दिया। अब लड़की बड़ी हुई तो गांव के लोग उसे बछड़े की पत्नी कहकर परेशान करने लगे। वह इससे इतनी दुखी हुई कि उसने आत्महत्या कर ली। जहाँ वह मरी, वहाँ उसी समय एक करौंदे का विशाल पेड़ उग आया। जैसे ही बछड़े को लड़की की मौत के बारे में पता चलता है, वह दौड़कर पेड़ के पास जाता है और इतना रोता है कि उसकी भी मौत हो जाती है। जहाँ बछड़ा मरता है, वहाँ एक केले का विशाल पेड़ उग आता है।

पास ही एक अन्य गांव में, एक रानी और उसकी हथिनी को गर्भ नहीं ठहर रहा था। एक दिन वे दोनों गांवों के निरीक्षण पर निकलीं और वहीं करौंदे और केले के पेड़ों के नीचे विश्राम करने लगीं। विश्राम के दौरान रानी ने करौंदा और हथिनी ने केला खाया था, इससे दोनों गर्भवती हो गईं और उन्होंने समय आने पर सुंदर संतानों को जन्म दिया। रानी ने अपनी बेटी का नाम नुकरुई और हथिनी ने अपने बेटे का नाम सायपुईनेवेंग्पा (सफेद हाथी) रखा।

नुकरुई ज्यों-ज्यों बड़ी होती, उसकी सुंदरता बढ़ती जाती थी। उसके बाल खूब लंबे और घने थे। नुकरुई को अपने माता-पिता का भी बहुत प्यार मिलता था। एक दिन नुकरुई अपने बाल धोने के लिए नदी पर गई थी। धोते समय उसके कुछ बाल टूटकर पानी में बहने लगे। नदी में आगे उसी ओर सायपुईनेवेंग्पा नहा रहा था, उसको इतने लम्बे बाल देखकर बड़ा अचंभा हुआ-"इतने लम्बे बालों वाली यह कौन हो सकती है? सायपुईनेवेंग्पा ने काफ़ी सोचा। आखिर जब कुछ नहीं सूझा तो उसने बालों को उठाकर दलदली भूमि में दफन कर

दिया। इससे अचानक नुकरुई बीमार पड़ गई और युवावस्था में ही अपंग हो गई।

इससे नुकरुई के माता-पिता बहुत चिंतित हो उठे। उन्होंने किसी भी ऐसे व्यक्ति से अपनी बेटी की शादी करने की योजना बनाई, जो उसे ठीक कर दे। जब सायपुईनेवेंग्पा को इसका पता चला तो उसने मनुष्य का रूप धरा और नुकरुई के माता-पिता के सामने जाकर बोला- "मैं आपकी बेटी को ठीक कर दूँगा। इसके लिए मुझे कुछ स्वस्थ मुर्गियों की ज़रूरत है।" जब पहली मुर्गी का बलिदान हुआ, तो नुकरुई थोड़ा स्वस्थ महसूस करने लगी, क्योंकि सायपुईनेवेंग्पा ने दलदल में दफन बालों को भी निकाल लिया था। छठी मुर्गी की बलि होते-होते नुकरुई पूरी तरह स्वस्थ हो गई। नतीजतन, सायपुईनेवेंग्पा की शादी नुकरुई से हो गई।

इस तरह कई महीनों तक नव विवाहित दंपति नुकरुई के माता-पिता के घर पर ही रहे। एक दिन सायपुईनेवेंग्पा ने नुकरुई के पिता से कहा- "पिताजी, कृपया मुझे अपने माता-पिता के पास जाने की अनुमति दें क्योंकि लंबे समय से मैंने उन्हें नहीं देखा है।" नुकरुई के माता-पिता इस पर राजी हो गए। अपनी बेटी की दुल्हन के रूप में विदाई के लिए उन्होंने एक समारोह आयोजित किया और उसके ससुराल ले जाने के लिए अनेक चीजें जैसे बड़ी टोकरियाँ, मायरंग[4], खुरी[5] आदि की व्यवस्था कर दी। रास्ते में, अचानक सायपुईनेवेंग्पा अपने असली हाथी रूप में आ गया। उसने नुकरुई को अपनी पीठ पर रख लिया और उसके घर से लाई सारी चीजें एवं तोहफ़े तोड़ डाले। जंगल में लकड़ी बीनने वाले लोगों ने जब यह हादसा देखा, तो वे गांव पहुंचे और नुकरुई के माता-पिता को इसकी सूचना दे दी।

यह सुनते ही नुकरुई के माता-पिता चिंतित हो गए और उन्होंने घोषणा कर दी कि, "जो कोई भी हमारी बेटी को उस राक्षस के चंगुल से छुड़ाकर लाएगा, हम उसकी शादी नुकरुई से कर देंगे।" सायपुईनेवेंग्पा को हराना कोई आसान बात नहीं थी। सो उससे लड़ने के लिए योग्य और भरोसेमंद व्यक्ति की तलाश की गई। बड़ी मात्रा में चावल पकाया गया और एक भुजा जितने लंबे तंबाकू के पत्ते की बीड़ी बनाई गई। अब यह शर्त रखी गई कि जो व्यक्ति इन सारे चावलों को खा लेगा और बांह जितने लंबे तंबाकू के पत्ते का धूम्रपान कर जाएगा, वही सायपुईनेवेंग्पा से लड़ने के योग्य होगा। बहुत लोगों ने कोशिश की लेकिन सफ़लता नहीं मिली। आखिर खोतिर और राङचाल नामक दो भाई आगे बढ़े। बड़े भाई खोतिर ने कोशिश की लेकिन आधा चावल ही खा पाया। पर छोटा भाई राङचाल न केवल पूरा चावल खा गया, बल्कि धूम्रपान भी कर गया। यह साधारण लोगों के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। अब दोनों भाई सायपुईनेवेंग्पा से

लड़कर नुकरुई को बचाने के लिए चल दिए। कई दिनों तक जंगली रास्तों से चलते-चलते वे बुरी तरह थक गए। आखिर राङचाल ने बैठते हुए कहा- मैं बहुत थक गया हूँ। आगे नहीं चल पाऊँगा। तुम हाथी के कदमों का पीछा करते हुए जाओ और नुकरुई को बचा लाओ।' खोतिर के लिए एक झोंपड़ीनुमा बेड़ा बनाया गया। इसके बाद हाथी के कदमों के निशान पहचानते हुए राङचाल आगे चल पड़ा। कुछ दिन में वह सायपुईनेवेंग्पा के घर पहुंच गया। वहाँ जाकर उसने देखा कि नुकरुई एक चंपा के पेड़ के पास बुनाई में व्यस्त थी। राङचाल चंपा पर चढ़ गया और नुकरुई की ओर एक फूल फ़ेंका तो नुकरुई ने ऊपर देखा और राङचाल को देखकर चकित हो गई। "मैं आपको साथ घर ले जाने के लिए आया हूं।" राङचाल ने फ़ुसफ़ुसाकर कहा। "नहीं, आप मुझे नहीं ले पाएँगे। उस राक्षस को हराने के लिए बहुत शक्ति चाहिए। वह खुद को किसी भी रूप में बदल सकता है। उसके पास अपनी सुरक्षा के लिए मेइची तिची नाम का एक विशेष उपकरण है।" नुकरुई ने कहा।

"वह अब कहाँ है?" राङचाल ने चिंतित होकर पूछा।

"वह अब चाङलाङ (केले) खाने के लिए निकल गया है।" नुकरुई ने उत्तर दिया।

"फिर वह कब वापस आएगा?" राङचाल ने फिर से पूछा।

"यदि वह राक्षस कहता है कि आज आएगा, तो कल आता है और कहता है कि कल आएगा तो वह आज आएगा, इस बार राक्षस कल आने की कहकर निकला है, तो वह निश्चित रूप से आज घर लौट आएगा।" नुकरुई ने कहा।

जब सायपुईनेवेंग्पा शाम को घर लौट आया, तो उसे कुछ शक हुआ और इधर-उधर सूंघने लगा।

"मुझे आस-पास इंसान की गंध आ रही है।" सायपुईनेवेंग्पा ने कहा।

यह सुनकर नुकरुई मुस्कुराते हुए बोली- "क्या आप मुझे नहीं देख पा रहे हैं, आपके सामने एक इंसान ही तो खड़ी है? यदि आप बहुत डरते हैं, तो आप मेरी सुरक्षा के लिए मेईची-तिची क्यों नहीं छोड़ते हैं।" अगले दिन जाने से पहले, सायपुईनेवेंग्पा ने मेइची-तिची को नुकरुई के साथ छोड़ दिया। अगले दिन जब सायपुईनेवेंग्पा केले खाने के लिए निकल गया तो पीछे से राङचाल घर में प्रवेश कर गया। अगले दिन शाम को जब सायपुईनेवेंग्पा के आने का समय हुआ तो उसने मेइची-तिची के सहारे घर के चारों ओर आग लगा

दी ताकि सायपुईनेवेंग्पा घर में न घुस सके। यह देखकर सायपुईनेवेंग्पा को बहुत गुस्सा आया और उसने घर की दीवारें तोड़ डालीं और राङचाल को मारने दौड़ा।

इससे राक्षस और राङचाल के बीच कुश्ती होने लगी, जिसे ऊपर स्वर्ग में बेठे देवतागण देख रहे थे, कुछ देर बाद देवताओं ने अपनी पत्नियों से पूछा, "आप किसकी ओर हैं?"

"हम तो उस हाथी का समर्थन करेंगे, यह मनुष्य उसकी पत्नी को क्यों छीन लेना चाहता है? यह उचित नहीं है।" देवताओं ने कहा।

"आप हाथी के लिए परेशान न हों। वह बहुत स्वार्थी है। सिर्फ़ अपने बारे में सोचता है। हमेशा खुद के लिए सोचता है, जबकि उस मनुष्य को देखो, वे बहुत आभारी हैं, वे हमेशा हमें फसल और अन्य चीजें सबसे पहले प्रसाद के रूप में चढ़ाते हैं।" पत्नियाँ बोलीं।

यह सुनकर देवताओं ने राङचाल को फईफाक ('कर्कुलिगो ऑर्चियोइड्स' यानी एक औषधीय पौधा) काटने के लिए कहा। जैसे ही राङचाल ने फईफाक काटा, सायपुईनेवेंग्पा का सिर अपने आप कटकर एक ओर लुढ़क गया। हाथी के कटे गले से बुरी तरह खून बहना शुरू हो गया, जिसमें राङचाल पूरी तरह से खून से भीग गया और कुछ देर में वह वहीं बेहोश हो गया। नुकरुई को लगा कि इस सारे मामले की जिम्मेदार वह है, सो उसने रोना-चीखना शुरू कर दिया। यह देखकर अब स्वर्ग के देवताओं ने उसे राङचाल का शरीर गर्म पानी में धोने का सुझाव दिया। जैसे ही नुकरुई ने राङचाल का शरीर गर्म पानी में धोया, वह जिन्दा हो गया।

इसके बाद राङचाल नुकरुई को लेकर उस जगह आया, जहाँ खोतिर उसके लिए इंतजार कर रहा था। जब वह वहां पहुंचा तो उसे खोतिर गंजा मिला। उसके गंजेपन के बारे में पूछे जाने पर, खोतिर ने बताया कि जब भी वह आग जलाने की कोशिश करता, उसके सिर पर एक रुमूपुई यानी 'विशाल बाज' झपट्टा मारता था। रुमूपुई को हमले के लिए बुलाने हेतु राङचाल ने आग जलाई और जैसे ही आग जली, रुमूपुई हमले के लिए नीचे आया। बस राङचाल ने तुरन्त अपनी खानदाई यानी तलवार से उसे मार दिया। इसके बाद उन्होंने जल्दी से झूमखेत का घर छोड़ दिया और राक्षसों के रास्ते पर आ निकले। "जब तक हम इस रास्ते को पार नहीं करते हैं, तब तक यह कोई मत बोलना कि मैं बहुत थक चुका हूं, चाहे कितने भी थक जाओ," राङचाल ने चेतावनी दी। अब वे जल्दी-जल्दी चलने लगे। आखिर उन्हें थकान होने लगी। न

चाहते हुए भी खोतिर के मुंह से निकल गया- "मैं बहुत थक गया।

"अरे नहीं, यह तुमने क्या किया, मैंने तो पहले ही चेतावनी दी थी, दी थी कि नहीं? अब हमको रात भर यहीं रुकना पड़ेगा" राङचाल ने गुस्से में कहा। खैर, अब तीनों को वह भयानक रात वहीं बितानी थी। रात को अनेक भयानक राक्षस प्रकट हुए और तरह-तरह से राङचाल को डराने लगे, लेकिन वह उनसे बिल्कुल नहीं घबराया और बोला कि मेरे पास तुम लोगों को मारने के लिए रमूपुई के पंजे, हाथी के दाँत और एक बड़ी तलवार है। राङचाल पूरी रात बहादुरी से उनका सामना करता रहा, जबकि खोतिर और नुकरुई झपकियाँ लेते रहे। भोर के समय राङचाल ने उन दोनों को जागकर रखवाली के लिए कह दिया और खुद कुछ देर के लिए झपकी लेने हेतु लेट गया। पर उसे गहरी नींद आ गई, इधर राक्षस आए और खोतिर तथा नुकरुई को वहाँ से कहीं दूर उठा ले गए। उन्होंने खोतिर को एक मेंढक में बदल दिया और उसकी जीभ को टेढ़ा कर दिया। इसके बाद उन्होंने नुकरुई को एक ऊँची चट्टान के नीचे छिपा दिया। अब तक दिन निकल आया था। सो जैसे ही राङचाल की नींद खुली, उसको वे दोनों अपने आस-पास नहीं मिले। राङचाल घबराकर उन्हें नाम ले-लेकर आवाज देने लगा। उसकी आवाज के प्रत्युत्तर में पास के तालाब से एक मेंढक के बुरी तरह टर्राने की आवाज आ रही थी। आखिर राङचाल ने उस मेंढक को ढूँढ़ निकाला और उसकी जीभ सीधी कर दी। इसके कारण वह अपने मूल रूप में आकर खोतिर बन गया। खोतिर बनने के बाद उसने बताया कि राक्षस नुकरुई को चट्टान के नीचे ले गए थे। आखिरकार एक लंबी खोज के बाद उन्हें नुकरुई मिल गई, और वे उसे चट्टान से बाहर ले आए। लेकिन बाहर आते ही उसे याद आया कि वह अपनी प्रिय तलकाल (बालों की पिन) तो वहीं छोड़ आई थी। अब वह रोते हुए दोनों भाइयों से उसे वापस ले आने की मिन्नतें करने लगी, क्योंकि वह उसके माँ-बाप द्वारा उसे दी हुई एकमात्र निशानी थी।

उसके आँसू पोंछकर राङचाल तलकाल लेने के लिए राक्षसों की चट्टान पर पहुँचा, पर दुर्भाग्यवश वह वहाँ जाकर पकड़ा गया। उन्होंने उस पर एक राक्षसी के साथ विवाह करने का दबाव बनाया। इसके कुछ ही सालों बाद उस राक्षसी को राङचाल से तीन बच्चे पैदा हुए। राङचाल कहीं भाग न जाए, इस डर से राक्षसी ने अपने बच्चों को हिदायत दे रखी थी कि, “वे अपने पिता पर निगरानी रखें, वरना वह कभी भी उन्हें छोड़कर भाग सकता है।’ "कभी उसे पोइरु यानी जंगली बेल के बीज मत देना और ना ही कोई एक चाकू उसे मिलना चाहिए।"- राक्षसी ने आगे समझाया था।

एक दिन, जब उसकी राक्षसी पत्नी जंगलों में गई हुई थी, राङ्चाल ने वहाँ से भागने की योजना बनाई। तभी उसके तीनों बच्चों में सबसे छोटा आया और उसे चुपके से एक पोइरु दे गया। राङ्चाल ने जल्दी से पोइरु को आँगन में रोप दिया। देखते ही देखते वह एक विशाल वृक्ष में बदल गया। वह जल्दी से पेड़ की अंगूर की लताओं पर चढ़ने लगा। तभी उसके बच्चे सुबकते हुए बोले- "पिताजी, हमें छोड़कर मत जाओ।" 'बच्चे सबके एक से होते हैं, चाहे वे मनुष्य के हों या फ़िर दानवों के', उन्हें रोते देख राङ्चाल ने सोचा और भावुक होकर नीचे उतरने लगा। पर कुछ देर बाद राङ्चाल फ़िर से अंगूर की लताओं पर चढ़ने लगा, इस बार उसने अपने साथ एक चाकू ले लिया था। उसे चढ़ते देख बच्चे फ़िर रोकर कहने लगे- "पिताजी, कृपया हमें छोड़कर मत जाओ।"

लेकिन इस बार राङ्चाल सचेत था। उसने बच्चों को बहकाने के लिए पेड़ की ऊपरी शाखा पर चढ़ते हुए पेशाब करना शुरू कर दिया और बोला- "बच्चो, अब मैं बारिश करने जा रहा हूँ, जाओ और बाहर से कपड़े इकट्ठे कर लो।" भोले बच्चे तुरंत भाग-भागकर कपड़े इकट्ठे करने लगे। इधर राङ्चाल ने तुरन्त अंगूर की लताओं की शाखाएँ काट दीं और जल्दी से उस खतरनाक इलाके से भाग निकला।

चलते-चलते वह एक बुढ़िया की झोपड़ी में पहुँचा। उसने तलकाल के बदले में उससे कुछ खाने के लिए माँगा। बुढ़िया नासमझी में उस तलकाल को लेकर नुकरुई के पास बेचने के लिए चली गई। अपने तलकाल को देखकर नुकरुई बहुत चकित हुई। उसने बुढ़िया से पूछा- "मुझे ईमानदारी से बताएँ, क्या आपके घर में कोई अतिथि आया हुआ है?" नुकरुई को चिंता हो आई थी। लेकिन बुढ़िया ने इसे तुरंत नकार दिया- "नहीं, मेरे यहाँ कोई अतिथि नहीं है। यह तलकाल तो मेरी है।" उसके इनकार के बावजूद नुकरुई को तसल्ली नहीं हुई और वह बुढ़िया के घर जा पहुँची, जहाँ राङ्चाल आराम कर रहा था। उसे देखकर नुकरुई की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह उसे जिन्दा देखकर बेहद खुश थी। आखिर में, राङ्चाल और नुकरुई ने शादी कर ली और उन्होंने बहुत समय तक सुखपूर्वक जीवन बिताया।

2

औगज्राफा बाय ताउक्रूमा[6]

यह कहानी सुअरों के राजा और ताउक्रूमा पक्षी की है।

एक समय की बात है, कई दिन तक बारिश नहीं होने के कारण संसार में सूखा पड़ गया था। पेड़-पौधे, नदी-नाले, जंगल सब सूख गए। सारे जीव-जन्तु इस आपदा से बहुत परेशान थे, खाने-पीने के लाले पड़े हुए थे। इस मुसीबत का हल निकालने के लिए जंगल में सभी पशु-पक्षियों ने एक बैठक की, सभी ने कोई न कोई उपाय बताया, परन्तु वे एकमत नहीं हो पाए और अपने-अपने अश्रा-स्थान को चले गये। उस बैठक में औगज्राफा[7] और ताउक्रूमा[8] भी शामिल थे। सबके चले जाने के बाद दोनों ने मिलकर यह तय किया कि दोनों मिलकर एक तालाब खोदेंगे, ताकि कम से कम पीने के लिए पानी मिले।

औगज्राफा और ताउक्रूमा, दोनोंइधर-उधर घूमने के बाद एक स्थान निश्चित कर तालाब खोदना शुरू कर देते हैं। औगज्राफा अपने खुर और दाँतों से और ताउक्रूमा पक्षी अपने पंजों और चोंच से खुदाई करते हैं। देखते ही देखते दोनों काफी गहरी खुदाई कर लेते हैं। आखिर वहाँ से पानी निकलना शुरू हो जाता है। दोनों बहुत खुश होते हैं और सबसे पहले दोनों जमकर अपनी-अपनी प्यास बुझाते हैं। प्यास बुझने के बाद दोनों को जोरों की भूख लग आती है। दोनों को यह पता था कि अगर वे भूख मिटाने जाएँगे तो पीछे से सारे पक्षी और जानवर आकर पानी पी लेंगे, इसलिए दोनों यह तय करते हैं कि बारी-बारी से भोजन की तलाश में जाएँगे, एक के पीछे दूसरा तालाब की रखवाली करेगा।

सबसे पहले औगज्राफा भोजन ढूँढने जाता है। उसके जाते ही कुछ जानवर पानी की तलाश में तालाब आ पहुँचते हैं। उन्हें करीब आते देखकर ताउक्रूमा बोला-'अगर आप लोगों को पानी पीना है तो पहले औगज्राफा से युद्ध करना होगा, उसे हराए बिना आप लोग इस तालाब से पानी नहीं पी सकते।'

जानवर प्यास से व्याकुल थे, वे मजबूरी में औगज्राफा से युद्ध के लिए राजी हो जाते हैं, पर उनमें से किसी ने औगज्राफा को नहीं देखा था, वह दीखता कैसा है, उसकी विशेषताएँ क्या-क्या हैं, किसी को नहीं पता था, वे जानकारी लेने के लिए ताउक्रूमा से ही पूछते हैं। ताउक्रूमा उन्हें बताता है-'औगज्राफा, एक विशाल जानवर है, वह दुनिया का सबसे ताकतवर जानवर है। उसके कान बहुत बड़े-बड़े हैं, आँखें मुर्गी के अंडे जैसी हैं, उसके दाँत तलवार जितने बड़े और तेज धार वाले हैं, उसका सीना बहुत चौड़ा है और शरीर सामने के पहाड़ जितना बड़ा और मजबूत है।' औगज्राफा के बारे में

ये बातें सुनते ही आए हुए जानवर डरकर भाग जाते थे। एक के बाद एक जानवर और पक्षी आते गए पर किसी में औगज़ाफा के सामना करने की हिम्मत नहीं थी।

अंत में म्शाफा[9] आया। ताउक्रूमा ने उसे भी वही चुनौती दी, और कहा-'आप औगज़ाफा को हरा पाएँगे तभी आपको तालाब से पानी मिलेगा, नहीं तो यहाँ से जाना पड़ेगा।'

शेर ने पूछा-'कौन है ये औगज़ाफा?, मुझे भी बताओ, वह दीखता कैसा है, कहाँ रहता है?' ताउक्रूमा शेर को भी बताता है कि- 'औगज़ाफा, एक विशाल जानवर है, वह दुनिया का सबसे ताकतवर जानवर है। उसके कान बहुत बड़े-बड़े हैं, आँखें मुर्गी के अंडे जैसी हैं, उसके दाँत तलवार जितने बड़े और तेज धार वाले हैं, उसका सीना बहुत चौड़ा है और शरीर सामने के पहाड़ जितना बड़ा और मजबूत है।' यह सब सुनने के बाद भी शेर को ज्यादा फर्क नहीं पड़ा, बोला- मैं औगज़ाफा से युद्ध के लिए तैयार हूँ और इतना कहकर वह तालाब से पानी पीने लगता है।

यह देखकर ताउक्रूमा औगज़ाफा को आवाज लगता है- ओ आचु[10] औगज़ाफा!, ओ आचु औगज़ाफा! आपके तालाब का पानी शेर पी रहा है, कुछ ही देर में सारा पानी पी जाएगा, ओ आचु औगज़ाफा! जल्दी आओ।' ताउक्रूमा के बुलाने पर औगज़ाफा दौड़ता हुआ आया और आते ही शेर को ललकारा-'मुझसे पूछे बगैर तुमने मेरे तालाब से पानी पीने की हिम्मत कैसे की? साहस है तो आओ, मुझ से युद्ध करो। औगज़ाफा की ललकार सुनकर शेर बोला- पूछे बिना तुम्हारे तालाब का पानी पी रहा हूँ, खुद को बलवान मानते हो तो आओ, मुझ पर वार करो।

फिर क्या था, देखते ही देखते दोनों में घमासान युद्ध छिड़ जाता है, दोनों बराबर के ताकतवर थे, कभी शेर जीतता तो कभी औगज़ाफा। ताउक्रूमा एक पेड़ की ऊँची डाली पर बैठकर सब कुछ देख रहा था, इस युद्ध को रोक पाना उसके वश में नहीं था, डर के मारे वह थर-थर काँप रहा था। अंत में पहले शेर ने अपने पंजे से औगज़ाफा की छाती चीर दी, फिर औगज़ाफा ने भी अपने नुकीले दाँतों से शेर का पेट फाड़ दिया। इससे दोनों वहीं दम तोड़ देते हैं। इसके बाद ताउक्रूमा तालाब का मालिक बन जाता है, साथ में उसे भोजन के रूप में शेर और औगज़ाफा के माँस भी मिलते हैं। इस बात से वह इतना खुश होता है कि खुद को संभाल नहीं पाता, वह कभी माँस खाता है तो कभी पानी पीता है, खाते-खाते उसका पेट पूरी तरह भर चुका था, फिर भी वह नहीं रुकता, जब उससे माँस का एक भी टुकड़ा और नहीं खाया गया तो वह किसी तरह उड़ा और एक छोटी-सी टहनी पर जा बैठा। टहनी उसका वजन नहीं उठा पाई और टूट गई। उसके साथ ही ताउक्रूमा भी धड़ाम से नीचे आ गिरता है, टूटी हुई टहनी का नुकीला भाग सीधे उसके पेट में

आ धँसता है, जिससे उसका पेट फट जाता है और वह भी वहीं तालाब के पास दम तोड़ देता है।

इस तरह अहंकार ने औगज्राफा और शेर की जान ली तो लोभ ने ताउक्रूमा की।

3

बाबा गॉरिया आचाईमानि कथमा[11]

यह जमातिया जनजाति के इष्ट और लोकदेवता बाबा गॉरिया के अवतार लेने की कथा है। जमातिया जनजाति के लिए बाबा गॉरिया ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं। इस जनजाति की मान्यता के अनुसार बाबा विभिन्न रूपों में धरती पर अवतार लेकर आते रहे हैं। मान्यता है कि बाबा के अवतार लेने से पहले देवलोक में यह बात छिड़ी कि बाबा गॉरिया को धरती पर जन्म लेना है, लेकिन किस माता के गर्भ से उन्हें पैदा होना है, जन्म के बाद उनका नामकरण क्या होगा आदि-आदि। पर कोई भी इन प्रश्नों का निर्धारण नहीं कर सका। अंतत: अचाई के सपने में एक कौवा आता है और उन्हें बाबा के धरती पर अवतार लेने के बारे में बताता है। अचाई सपने का अनुसरण करते हुए बाबा का जन्म के बाद नामकरण करते हैं। प्रस्तुत कथा उनके गॉरिया अवतार की है-

सृष्टि के आरम्भ में त्रिपुरा की सबसे ऊँची पहाड़ी पर नक कुरिदक नकदक[12] का एक गाँव था। इस पहाड़ी पर रहने वाले सारे पशु-पक्षियों के शरीर पर धारियाँ पाई जाती थीं, इसलिए लोगों ने इस गाँव का नाम 'जारि मेतेरेंग'[13] रखा। यह अपने समय का सबसे बड़ा गाँव था। इस गाँव में चकदिरी[14] लकताई[15] नामक एक व्यक्ति था। उसकी पत्नी का नाम हाचुकति था। बारह साल गुजर गए थे, पर वे दोनों आज तक संतान सुख से वंचित थे। दोनों सुबह-शाम इष्टदेव को याद करते हुए संतान-सुख की प्रार्थना करते रहते थे। आस-पास के लोगों द्वारा उन्हें जो-जो उपाय बताए गए, सब आजमाकर देख लिए, पर कोई हल नहीं निकला। इसी क्रम में एक दिन वे श्मशान गए और सुकून्द्राई-मुकून्द्राई के घाट पर जाकर केर[16], कोथार[17] और कोबोई[18] नियमों का पालन करते हुए हाचुक मोताई सालपति-हरपति[19] का नाम जापते हुए कठोर साधना करने लगे।

दोनों के कठोर तप से प्रसन्न होकर स्वयं सृष्टि के मालिक उनके सामने प्रकट हुए और उन्हें

आशीर्वाद दिया कि उन्हें जल्दी ही इच्छित संतान की प्राप्ति होगी। इष्टदेव का आशीर्वाद पाने के बाद लकताई और हाचुकति दोनों अपने घर लौट आए। इस तरह लकताई और हाचुकति का इंतजार खत्म हुआ और आशीर्वाद के अनुरूप दस महीने दस दिन बाद गॉरिया के नाम से अपने वादे और सत्य को प्रकट करने के लिए जगत के मालिक ने हाचुकति की कोख से जन्म लिया। दोनों की खुशी का ठिकाना नहीं था। लकताई ने अपने गाँव में ही नहीं, पड़ोसी गाँवों- जारि कलक, जारि कुफूर, जारि कतर और जारि करमो में भी आवां[20] बँटवाई। लकताई और हाचुकति की इस खुशी में मानो सारा संसार शामिल हो गया था। बाबा गॉरिया के जन्म लेते ही धरती का माहौल अचानक से खुशनुमा हो गया। ऐसा माहौल बन गया, जिसे पहले कभी किसी ने नहीं देखा था, शिशु के स्वागत में वसंत ऋतु की दक्षिणी शीतल बयार बहने लगी, चारों ओर फूल खिल गए; भंवरे उन पर मंडराते हुए गाने लगे; आसमान में तारे खिलने लगे, देवी-देवता आसमान से फूल बरसाने लगे, पशु-पक्षी, नदी-नाले, वन, पहाड़, पर्वत सभी नत-मस्तक होकर गीत गाने लगे-

जारि मेतेरेंग/लङत्राई जारिवो
लकताई बाय हाचुकतिनि आरो आचाई फायखा
मोसा, मायूङ जतो तङथक मोसाई खुलूंसक
बायखा[21]

लकताई और हाचुकति के बेटे को देखने सारे गाँव वाले, साथ ही दूर-दूर के रिश्तेदार भी आए। परन्तु यह क्या जो भी बच्चे को देखता, उसके मुंह से दु:ख-भरी आह निकल जाती। उसकी रीढ़ की हड्डी आम लोगों की तरह नहीं थी, वह इतनी सीधी और मजबूत थी कि उसके कारण नवजात हिल-डुल ही नहीं पा रहा था। सबको यही लगा कि यह कुछ दिनों का मेहमान है। उसके बाद जो भी बच्चे को देखते आता, उसे सिङकोराक ही संबोधित करता था। इस तरह लोगों की खुसुर-फुसुर सुनकर लकताई और हाचुकति बहुत दुखी और परेशान होते थे, क्या करें, क्या न करें, दोनों को कुछ भी समझ में नहीं आता था। कठोर तप और साधना के बाद दोनों को संतान की प्राप्ति हुई थी पर जब-जब वे बच्चे का चेहरा देखते, उन्हें अपना जी डूबता महसूस होता। दोनों ने अपने बेटे को कई अचाई[22] को दिखाया, दवा-दारू की, पर कुछ भी असर नहीं होता था। बच्चे को देखने अनेक अचाई आए, पर कोई भी सिङकोराक को ठीक नहीं कर पाया। पशु-पक्षी भी सिङकोराक को रोज देखने आते थे, वे उसके सामने नत-मस्तक होते और बड़े प्रसन्न भाव से लौट जाते थे।

इसी तरह कई दिन गुजर गए और बच्चे के नामकरण-संस्कार एवं अन्न-प्राशन का दिन आया। सारे लोग बच्चे के नामकरण में शामिल होने चकदिरी और चकदिरीजोक (लकताई एवं

हाचुकति) के घर आए। नामकरण की पूजा के लिए नापेहा अचाई को बुलाया गया। पूजा के दौरान सबकी निगाहें अचाई पर टिकी हुई थी। अचाई द्वारा बच्चे का क्या नाम रखा जाएगा, किस नाम से द्वार पूजा की जाएगी, आदि सारे लोग जानना चाहते थे। अचाई ने हल्दी के सात टुकड़े दाव पर लगाते हुए, एक लोटा पवित्र जल लेकर पूजा शुरू की और पूजा करते हुए बच्चे की माँ से पूछा- चकदिरीजोक[23] आपने बच्चे का नाम क्या सोचा है, बताओ?

चकदिरीजोक-दा अचाई! आप मेरे बच्चे का जो भी नाम सुझाएँगे, हमें मंजूर है? तब अचाई नापेहा ने पूजा में उपस्थित सभी लोगों के साथ विचार-विमर्श किया और बच्चे का नामकरण 'नरंसिङ' रूप में किया। बच्चे की सिङ[24] बहुत सीधी और मजबूत थी, लोगों की जुबान पर नरंसिङ चढ़ेगा तो क्या पता बच्चे की सिङ लोगों के आशीर्वाद से नरं[25] हो जाए, इसलिए अचाई ने उसका नाम नरंसिङ[26] रखा। इस तरह अचाई द्वारा पूरे विधि-विधान से सिङकोराक का नाम 'नरंसिङ' रखा गया। धरती के सभी प्राणियों ने फूल बरसाकर इस नाम का स्वागत किया। बच्चे के नामकरण के बाद ही लकताई और हाचुकति यकीन कर पाए कि अब उनकी संतान सुरक्षित है। कहते हैं, उस दिन से हाचुकति और लकताई नरंसिङ को अपनी आँखों के सामने रखते थे। नामकरण के बाद से नरंसिङ जो भी खाता, उसके शरीर को वह दुगुना लगता था। इस तरह वह कुछ ही महीनों में पूरी तरह स्वस्थ हो गया और इसके बाद आम बच्चों के सामान्य ढंग से बड़ा होने लगा। वह अपने दोस्तों के साथ दूर-दूर तक खेलने चला जाता। जैसे ही बुरी शक्तियों को पता चला कि जगत के बुबाग्रा[27] ने नरंसिङ रूप में अवतार लिया है तो वे रोज किसी न किसी बहाने से नरंसिङ को मारने के लिए आने लगे, पर उनकी एक न चलती; सब पस्त होकर लौटते। इसी तरह खेलते-कूदते अनेक वर्ष बीत गए। अब नरंसिङ विवाह योग्य हो गए थे।

लकताई और हाचुकति अब घर में बहू लाने और पोता-पोती खिलाने का सपना देखने लगे। गाँव के बड़े-बुजुर्ग, रिश्तेदारों से बातचीत की गई और पड़ोसी गाँव की एक सुन्दर सुशील लड़की से नरंसिङ का विवाह करा दिया गया, लेकिन यह क्या शादी के कई दिन बाद भी नरंसिङ ने अपनी पत्नी को हाथ तक नहीं लगाया, कभी उसे चेहरा उठाकर भी नहीं देखा। इससे दु:खी होकर लड़की अपने मायके लौट गई। कई महीनों तक ऐसे ही चला। कुछ समय बाद माता-पिता, रिश्तेदारों ने नरंसिङ की दूसरी शादी करवा दी, परन्तु यह लड़की भी नहीं टिक सकी, नरंसिङ ने उसे भी नहीं छुआ। इससे माता-पिता, रिश्तेदार सारे लोग परेशान रहने लगे। इस बार तय किया गया कि घर

में बहू न लाकर, नरंसिङ को ही लड़की के यहाँ घर-जमाई बनाकर भेजा जाएगा। एक दिन शुभ घड़ी देखकर नरंसिङ के दोस्त बाँसुरी की मधुर ध्वनि बजाते हुए उसे लड़की के घर पहुँचा आए, लेकिन अब भी बात नहीं बनी।

लकताई और हाचुकति ने बेटे-बहू का जो सपना देखा, अब टूटता हुआ नजर आ रहा था। दोनों ने हरसंभव कोशिश की कि बेटे का घर बस जाए, एक से बढ़कर एक खूबसूरत और गुणवती लड़कियों से उसकी शादी कराई गई। हर बार सात दिन सात रातें जगकर लोगों ने विवाह-समारोह का आनन्द उठाया, सृष्टि के सारे जीव भी शामिल होते रहे। इसी तरह नरंसिङ की सात बार शादियाँ कराई गईं पर किसी के साथ उसका घर नहीं बस पाया। माँ हाचुकति इस बात से दु:खी रहने लगी, बेटे में कोई कमी न थी, आकर्षक-सजीला युवक था, बहादुरी, साहस, ज्ञान-बुद्धि में उसके सामने कोई नहीं ठहरता था। रिश्तेदारों और आस-पास के गाँवों में खूब पसंद किया जाता था, हरेक माता-पिता अपनी बेटी का विवाह नरंसिङ से कराना चाहता था, लेकिन नरंसिङ खुद ही किसी स्त्री में रुचि नहीं लेता था, दोस्तों और जीजाओं ने उसे दांपत्य जीवन के गुर सिखाए, उसे समझाया भी, पर किसी स्त्री को छूना तो दूर, नरंसिङ ने उन्हें आँख उठाकर भी नहीं देखा। नरंसिङ को लेकर अब लोगों के बीच तरह-तरह से बातें होने लगी, उन्हें नपुंसक, गॉरया[28] आदि कहा जाने लगा। ये सब सुनकर लकताई और हाचुकति बहुत आहत होते।

इधर इन सांसारिक बातों से दूर नरंसिंह गाँव के हर व्यक्ति की मदद करने में लगे रहते, यहाँ तक कि वह आस-पास के सब लोगों, पशु-पक्षियों तक की मदद करते। लोगों को समझाते कि सबको आपस में मिलकर रहना चाहिए, अपनी संस्कृति से प्रेम करना चाहिए। अपने रहन-सहन, खान-पान और भाषा पर गर्व करना चाहिए। इष्टदेव की पूजा करनी चाहिए, अपने बड़ों का सम्मान करना चाहिए। गांव के अचाई जो कुछ भी बताएँ, उसे मानना चाहिए। आने वाली पीढ़ियों को इसके बारे में शिक्षा भी देनी चाहिए। गाँव के लोगों को नरंसिङ की बातें तो अच्छी लगतीं, लेकिन वे बार-बार उन्हें घर-परिवार में रमने की सलाह देते। सुनते-सुनते नरंसिङ भगवान पक गए थे, इधर उनके धरती से लीला पूरी कर जाने का समय भी आ गया था।

जाने से पहले गॉरया ने मायलुमा-खुलूमा[29] दोनों बहनों को पास बुलाया।

मायलुमा-खुलूमा- ओ बाबा! तुमने अपनी बेटियों को क्यों बुलाया?;

गॉरया- 'साजोक मायलुमा-खुलूमा! अब मेरा समय[30] समाप्त करने का समय आ गया है, सो मुझे जाना पड़ेगा। धरती के सारे जीव-जन्तु मेरी संतानें

हैं, अमीर-गरीब, लंगड़े-लूले, स्त्री-पुरुष सभी मेरे ही अंश हैं, मेरे जाने के बाद तुम दोनों को इन्हें संभालना है। दोनों बहनों ने कहा-'ओ बाबा! हमें इतनी बड़ी जिम्मेदारी मत दीजिए, हमसे नहीं हो पाएगा!'

गॉरया- 'साजोकमा![31] यह बात तो पहले से तय थी, तुम दोनों क्या भूल गई हो? इस धरती को तुम दोनों बहनों को ही संभालना है, अब मैं वापस लौटता हूँ।'

मायलुमा-खुलूमा - बाबा! हम कुछ नहीं भूले हैं।'

यह बात गाँव में चारों तरफ फैल जाती है। सभी गॉरया को रोकने की कोशिश करते हैं। गॉरया के माता-पिता लकताई और हाचुकति का रो-रोकर बुरा हाल हो जाता है। सारे जीव-जन्तुओं का भी यही हाल था। सबकी ऐसी हालत देखकर गॉरया उनसे साल में एक बार बुइसू-सेना के बीच फिर मिलने की बात करकर वहाँ से चले जाते हैं। जमातिया जनजाति द्वारा यही गॉरया पिछले चार सौ से अधिक सालों से लोकदेवता बाबा गॉरिया के रूप में पूजे जाते हैं।

संदर्भ :

1 रांखल लोककथा

2 बरसात के मौसम में जलावन को सुरक्षित रखने के लिए विशेष रूप से निर्मित झोपड़ी

3 जमीन पर दो से सात फ़ीट ऊँचे बांस लगाकर बनाई गई झोंपड़ी

4 थाली

5 कटोरा

6 रियांग लोककथा

7 सुअरों का राजा

8 पक्षी का नाम

9 शेर

10 दादा औगज्राफा

11 बाबा गॉरिया के जन्म की कथा, जमातिया लोककथा

12. 126 घरों का गाँव

13.धारीधार पहाड़

14.मुखिया

15.जमातिया जनजाति की मान्यता है कि लकताई इस धरती का सबसे बड़ा गाँव बूढ़ा था।

16.साधना

17.पवित्रता

18.सत्य

19.पहाड़ी देवता

20.मिठाई

21.लङतराई पहाड़ी में बाबा का जन्म हुआ/ लकताई और हाचुकति की गोद भई गई/ बाघ, हाथी आदि सब बाबा को नमन करने और खुशियाँ मनाने लगे

22.पुरोहित

23.गाँव बूढ़ा की पत्नी के लिए संबोधन

24.रीढ़ की हड्डी

25.मुलायम/नर्मल

26.जिसकी रीड़ की हड्डी नर्मल हो।

27.राजा

28.जो नहीं जुड़ता है

29.धान और कपास की देवियाँ

30.गॉरिया युग

31.बेटियो

संपर्क-सूत्र:

हिंदी विभाग

त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा